International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 237-238

'पवनदूती' रचना का संदेश

Dr. Swati
Principle, Divya Jyoti Central School, Hisar, Haryana, India

प्रस्तावना

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी का आधुनिक हिन्दी साहित्य में अविस्मरणीय स्थान है। 'प्रिय–प्रवास' महाकाव्य के छठे सर्ग में 'पवनदूती' नामक रचना संकलित है। 'पवनदूती' प्रसंग में राधा पवन को दूती बनाकर भगवान श्री कृष्ण के पास अपना प्रेम संदेश भेजती है। राधा भगवान श्री कृष्ण के विरह में व्याकुल है। लेकिन वह अपनी व्याकुलता में भी पवन से आग्रह करती है कि वह अपने मार्ग में आने वाले जन–साधारण की व्यथा को भी दूर करने का प्रयास करे।

राधा भगवान श्री कृष्ण को अत्यधिक प्रेम करती है। वह उनसे मिलने के लिए अत्यधिक व्याकुल है। इसलिए वह पवन के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण जो कि मथुरा चले गए थे, उनके पास विरह–संदेश पवन के माध्यम से भेजती है। तब वह पवन को यह भी दिशा–निर्देश देती है कि यदि रास्ते में कोई उसे दुःखी परेशान व्यक्ति मिले तो वह राधा के दुःखों को भूलकर पहले उसके दुःख–दर्द को दूर करने का प्रयास करे–

''तेरी जैसी मृदु पवन से सर्वथा शान्ति–कामी।
कोई रोगी पथिक पथ में जो पड़ा हो कहीं तो।
मेरी सारी दुखमय दशा भूल उत्कंठ होके।
खोना सारा कलुष उसका शान्ति सर्वांग होना।।''[1]

राधा एक समझदार इंसान है वह जानती है कि मानव जीवन में वाणी का कितना महत्त्व है। यह वाणी ही है, जो पराय को अपना बनाती है और अपनों को भी पराया बना देती है। यह वाणी ही है, जो सुखे ह्रदय को भी प्रसन्नता से भर देती है। अतः वह अपनी दूती पवन को कहती है–

''तू प्यारे का मृदुले स्वर ला, मिष्ट जो है बड़ा ही।
ज्यों यों भी है क्षरण करता, स्वर्ग का–सा सुधा को
थोड़ा भी ला श्रवण–पुट में, जो उसे डाल देगी।
मेरा सूखा ह्रदय तल तो, पूर्ण उत्फुल्ल होगा।।''[2]

वाणी की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। संगीत के क्षेत्र में विभिन्न यंत्रों का प्रयोग मधुरता के लिए किया जाता है। इसी कारण से मंदिर में की जाने वाली पूजा में वाधय यंत्र के द्वारा मन में एकाग्रता उत्पन्न करने का सार्थक प्रयास किया जाता है। कवि इसी पर प्रकाश डालते हुए कहता है–

''तू पूजा के समय मथुरा मंदिरो मध्य जाना।
नाना वाधो मधुर स्वर की मुग्धता को बढ़ाना।
किंवा ले के कियत तरू के शब्दकारी फलों का
धीरे–धीरे रूचिर रव से मुग्ध हो बजाना।।''[3]

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य मृग तृष्णा के पीछे भागता जा रहा है। वह प्राकृतिक वस्तुओं को अनदेखा कर रहा है। प्रकृति की महत्ता का कितना भी गुणगान किया जाए उतना ही कम है। वह मानव मात्र की भलाई के लिए तत्पर है। राधा प्रकृति की इस महत्ता को अच्छी प्रकार से समझती है। इसलिए वह पवन को कहती है–

''संलग्ना हो सुखद जल के श्रान्तिहारी कणों से।
लेके नाना कुसुम–कुल का गन्ध आमोदकारी।
निर्धूली हो गमन करना उद्धता भी न होना।
आते–जाते पथिक जिससे पन्थ में शान्ति पावै।''[4]

प्रकृति की मानवीय भावनाओं को चित्रित करते हुए कवि कहता है–

''आके पूरा सदन उसने सौरभीला बनाया।
चाहा सारा कलुष तन का राधिका के मिटाया।
जो बुंदे सजल दृग के, पक्ष में विधमाना।
धीरे–धीरे क्षिति पर उन्हे सौम्यता से गिराना।।''[5]

शक्ति व विश्वास का आपस में घनिष्ट संबंध है। भारत के परीधान होने का कारण यहीं रहा था कि हमने मन से अंग्रेजों को शक्तिशाली मान लिया था। इसलिए हरिऔध जी भगवान श्री कृष्ण को एक शक्तिशाली नायक के रुप में चित्रित करते हुए हम सब में शक्ति का संचार करने की कौशिश करते हैं, क्योंकि शक्तिशाली मनुष्य बुराई को पनपने नहीं देता तथा शत्रु भी उसके समक्ष ऊपर उठने की कोशिश नहीं करता–

''बैठे होंगे जितने शांत औ शिष्ट होंगे।
मर्यादा का सकल जन को ध्यान होगा बड़ा ही।
कह न सकता होगा कोई, बात दुर्वतत्ता की।
पूरा–पूरा ह्रदय सबके श्याम आंतक होगा''।।[6]

नारी मन बड़ा ही कोमल व भावुक होता है। यदि वह जीवन में किसी से प्यार भी करती है तो उसके प्रति पूर्णतः समर्पित होती है चाहे उसका प्रेमी उसे प्रेम करे या ना करे। इतना ही नहीं यदि वह उससे दूर भी चला जाता है तो भी वह उसकी यादों के सहारे अपने चित को शांत रखने का प्रयास करती है। राधा की इसी भावुकता का चित्रिण करते हुए कवि कहता है–

''यों प्यारे को विदित करके सर्व मेरी व्यथाएँ।
धीरे–धीरे वहन करके, पांव की धूलि लाना।
थोड़ी सी भी चरण रज जो, ला न देगी हमें तू
हा! कैसे तो व्यथित चित को, बोध मैं दे सकूंगी।।''[7]

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। कृषि पर ही हमारी अर्थव्यवस्था निर्भर करती है अर्थात् कृषक के परिश्रम पर हमारा व हमारे देश का विकास निर्भर करता है। राधा यह बात अच्छी तरह समझती है इसलिए वह पवन को कहती है–

''कोई क्लान्ता कृशक–ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे–धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना तत्प भूतांगना को।।''[8]

हमारे समाज में अर्थव्यवस्था के आधार पर विभिन्न वर्ग बने हुए हैं। जिसमें निम्न वर्ग उपेक्षित हैं। निम्न वर्ग को अपनी सामान्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी अथक परिश्रम करना पड़ता है। पति–पत्नी दोनों मिलकर कार्य करने पर भी अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते। राधा उनके दुःख–दर्द–तकलीफ को अच्छी तरह अनुभव करती है। वह जानती है कि छोटी–छोटी बात भी उनके जीवन को खुशियों से भर देती है। इसलिए वह पवन से कहती है–

''तू पावेगी कुसुम गहने, कांतता साथ पैन्हे।
उधानो में वर नगर की सुंदरी मालिनो को।
वे कार्यो में स्व–प्रियतम के तुल्य ही लग्न होंगी।
जो श्रांता हो, सरस गति से, तो उन्हें मोह लेना।।''[9]

भारत देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था, क्योंकि यहाँ आपार धन संपदा विद्यमान थी। अंग्रेजों का भारत आगमन का उद्धेश्य भी यहाँ की वैभव–सम्पदा को लूटकर अपने देश ले जाना था। भारत की वैभव–सम्पदा का परिचय हमारे इतिहास से पता चल जाता है। इसी वैभव–सम्पदा पर अप्रत्यक्ष रुप से 'पवनदूती' नामक रचना मे भी प्रकाश डाला गया है। यथा–

''राजाओ सा शिर पर लसा दिव्य आपीड होगा।
शोभा होगी उभय श्रुति में स्वर्ण के कुंडलों की।
नाना रत्नाकलित भुज में मंजु केयूर होंगे।
मोतीमाला लसित उनका कम्बु सा कंठ होगा।।''[10]

जीवन में जितना धन–सम्पदा का महत्व है। उस से कहीं ज्यादा, प्रेम का महत्व है। प्रेम है तो जीवन में आनंद भी है, उमंग भी है असके विपरीत प्रेम के बिना मानव जीवन शुष्क है। प्रेम रहित मानव जीवन कंगाल के समान हो जाता है। राधा अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहती है–

''सूखी जाती मलिन लतिका, जो धारा में पड़ी हो।
तो तूं पांवो निकट उसको, श्याम के ला गिराना।
यों सीधे तू प्रकट करना, प्रीति से वंचिता हो।
मेरा होना अति मलिन औ सूखते नित्य जाना।।''[11]

इस प्रकार 'पवनदूती' काव्य के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह रचना एक उच्च कोटी की महान रचना है। जो मानवीय प्रेम, धार्मिक सौहार्द्र का संदेश, शक्ति का संदेश, वाणी का महत्व, प्रेम की महत्ता, किसान की स्थिति तथा जनसाधारण की समस्याओं आदि को सशक्तत्ता के साथ अभिव्यक्ति देती है। इस में निहित संदेश आज भी अपनी महत्ता को ज्यों का त्यों बनाए हुए है। निःसंदेह 'पवनदूती' का संदेश उच्च है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई संशय नहीं है।

सन्दर्भ सूचि

1. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 6
2. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 11
3. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 7
4. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 5
5. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 3
6. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 8
7. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 10
8. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 6
9. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 76
10. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 8
11. 'आधुनिक हिन्दी कविता' डॉ० बाबू राम ('पवनदूती' : अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' पृ० नं 10